# 19

# अष्टाध्यायी का चतुर्थ अध्याय

इस पाठ में अष्टाध्यायी के चौथे अध्याय के कुछ सूत्रो की प्रमुख रूप से व्याख्या करेंगे। और दो तीन पांचवे अध्याय के भी। पूर्व पाठ में आप लेट्-लकार का भी और कसुन्-ङीप्-ङीष्-ऊङ्-ठञ्-मयट्-ढ-ङ्यण्-यत् इत्यादि प्रत्ययो के प्रयोग से जाना है। इस पाठ में यत्-ञ-यल्-घ-तातिल्-अञ्-वति इत्यादि विशिष्टम् तद्धित प्रत्ययो के विषय में आलोचना करेंगे। उनमें किस शब्द का किस अर्थ में प्रयोग होता है यह भी यहाँ प्रतिपादित करेंगे। यहाँ मत्वर्थ में मासतन्वोः, मधोर्ञ च, ओजसोऽहनि यत्खौ, वेशोयशआदेर्भगाद्यल्, ख च, सोममर्हति यः इत्यादि विशेष सूत्रों की व्याख्या करेंगे। वैदिक शब्दों को और लौकिक रूपों को भी यहाँ प्रदर्शित करेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- वेद में मत्वर्थ प्रातिपदिक से कौन से प्रत्ययो का विधान होता है यह जान पाने में;
- मासतन्त्वोः अर्थ प्रातिपदिक से कौन से प्रत्यय होते है यह जान पाने में;
- विशिष्ट तद्धितप्रत्ययो का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- तद्धितान्तशब्दो की प्रक्रिया को जान पाने में।

## 19.1 मत्वर्थे मासतन्वोः॥ (4.4.128)

**सूत्रार्थ**- मास और तनू प्रत्ययार्थ विशेषण हो तो मत्वर्थ प्रातिपदिक से यत् प्रत्यय होता है छन्द विषय में।

टिप्पणी



**सूत्र अवतरण**- नभः अस्ति अस्मिन् ऐसा विग्रह करने पर यत्-प्रत्ययविधान के लिए इस सूत्र की रचना की।

**सूत्र व्याख्या**- यह विधिसूत्र। इस सूत्र में दो पद है। मत्वर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। मासतन्वोः यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आ रही है। प्राग्घिताद्यत् इस सूत्र से यत् इसकी अनुवृति आती है। ङ्याप्प्रातिपदिकात् इस सूत्र से प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति आती है। प्रत्ययः परः इन दो पद का यहाँ अधिकार है। तद्धिताः इसका अधिकार है। और उसका प्रथमा एकवचनान्त से विपरिणाम है। ''छन्दसि मासतन्वोः प्रातिपदिकात् तद्धितः यत् प्रत्ययः परः'' यह पदयोजना है। और उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में मास तनू अर्थ का वर्तमान प्रातिपदिक से मत्वर्थ में यत्-प्रत्यय होता है।

**उदाहरण**- नभस्यः (भाद्रपदः)। ओजस्या (तनूः)।

**सूत्रार्थ का समन्वय**- नभस्- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने से और उस नभस्- प्रातिपदिक से नभः अस्मिन् अस्ति इति विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय करने पर नभस् यत् इस स्थिति में यत्-प्रत्ययान्त्य के तकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उसकी इत्संज्ञक तकार का लोप होने पर नभस् य इस स्थिति में संयोग करने पर नभस्य इस शब्द स्वरूप का कृत्प्रत्ययान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा। उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङ सिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्ययो प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यये करने पर नभस्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार उस सुप्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर नभस्य स् ऐसा होने पर समुदाय का सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर तदन्त सकार के स्थान पर ससजुषो रुः इससे रु- यह आदेश हुआ और अनुबन्धलोप होने पर नभस्य र् यह हुआ समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर और सभी वर्णो के मिलान करने पर नभस्यः यह रूप सिद्ध होते है।

## 19.2 मधोर्ञ च॥ (4.4.129)

**सूत्रार्थ**- मधुप्रातिपदिक से मत्वर्थ में मास और तनू को ञ और यत प्रत्यय होता है।

**सूत्र अवतरण**- मधु अस्ति अस्मिन् इस विग्रह करने पर मधुशब्द से ञ प्रत्यय विधान करने के लिए और यत्-प्रत्ययविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई।

टिप्पणी

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। मधोः यह पञ्चम्यन्त पद है। ञः यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति आ रही है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आती है। प्राग्घिताद्यत् इस सूत्र से यत् इस की अनुवृति आती है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका अधिकार है। तद्धिता इसका अधिकार है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि मत्वर्थे मासतन्वोः मधोः ञ यत् च तद्धितः प्रत्ययः परः इति। यहाँ मासतन्वोः इस पद से उनका बोध कराने वाले अर्थो को जानना चाहिए। और उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में मधु प्रातिपदिक से परे मत्वर्थ तद्धित ञ प्रत्यय और यत्प्रत्यय परे हो मास और तनू अर्थ में है।

**उदाहरण**- माधवः मधव्यः चेति।

**सूत्र अर्थ का समन्वय**- मधु- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और मधु अस्मिन् अस्ति यह विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से ञ- प्रत्यय करने पर ञ- प्रत्यय के आदि ञकार की चुटू इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपः इस सूत्र से उसकी इत्संज्ञक ञकार का लोप होने पर मधु अ ऐसे होने पर तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से मधु- शब्द के आदि अच अकार की वृद्धि स्थान आन्तर्य से आकार करने पर माधु अ ऐसी स्थिति में ओर्गुणः इस सूत्र से उकार का गुण स्थान आन्तर्य से ओकार माधे अ इस स्थिति में एचोऽयवायावः इस सूत्र से ओकार के स्थान पर अव आदेश होने पर माधव् अ इस स्थिति में सभी वर्णों के मिलान करने से निष्पन्न माधव इस शब्दस्वरूप की तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा। उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्ययो में प्राप्त प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर माधव सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सु प्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर माधव स् ऐसी स्थिति में समुदाय का सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर उसके अन्त्य सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु- यह आदेश और अनुबन्धलोप होने पर माधव र् ऐसी स्थिति में समुदाय के अन्त्य रु के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर सभी वर्णों को मिलाने पर **माधवः** यह रूप सिद्ध होता है।

**मधु**- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इससे प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर। उसके बाद मधु अस्ति अस्मिन् ऐसा विग्रह करने पर मधुशब्द से प्रकृतसूत्र से यत्- प्रत्यय करने पर मधु यत् इस स्थिति में यत्- प्रत्ययान्त्य के तकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्यंज्ञा होने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत्संज्ञक तकार का लोप होने पर मधुय इस स्थित और उकार को गुण ओकार करने पर मधे य इस स्थिति में वान्तोयि प्रत्यये इस सूत्र से ओकार के स्थान में अव आदेश करने पर संयोग निष्पन्न

करने पर मधव्य शब्द का तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर मधव्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सु प्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर मधव्य स् इस स्थिति में समुदाय की सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उस पदसंज्ञा के अन्त्य सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु- आदेश और अनुबन्धलोप करने पर मधव्य र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश करने पर और सभी वर्णों को मिलाने पर मधव्यः यह रूप सिद्ध होता है।

## 19.3 ओजसोऽहनि यत्खौ॥ (4.4.130)

**सूत्रार्थ**- ओजस्-प्रातिपदिक से मत्वर्थ में दिन अभिधेय होने पर यत्-खौ प्रत्यय होता है।

**सूत्र का अवतरण**- ओजः प्रकाशः अस्ति अस्मिन् ऐसा विग्रह करने पर यत्-प्रत्यय विधान के लिए और ख प्रत्यय विधान के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

**सूत्रव्याख्या**- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से यत्-प्रत्यय और ख-प्रत्यय का विधान करते है। इस सूत्र में तीन पद है। ओजसः यह पञ्चम्यन्त पद है। अहनि यह सप्तम्यन्त पद है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति आती है। यत्खौ यह प्रथमान्त पद है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस विषयसप्तम्यन्त पद की अनुवृति आती है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इन तीन सूत्रो को यहाँ अधिकार है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना है- छन्दसि मत्वर्थे अहनि ओजसः प्रातिपदिकात् यत्खौ प्रत्ययः परः इति। और सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में अहनि (दिन) अर्थ में ओजस्प्रातिपदिक से यत्-खौ मत्वर्थीय प्रत्यय परे होते हैं।

**उदाहरण**- ओजस्यम्, ओजसीनम् चेति।

**सूत्र अर्थ का समन्वय**- ओजस्- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा और ओजः (प्रकाशः) अस्ति अस्मिन् इस प्रकार विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय करने पर ओजस् यत् इस स्थिति में हलन्त्यम् इस सूत्र से यत्-प्रत्ययान्त तकार की इत्संज्ञा और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक तकार का लोप होने पर ओजस् य इस स्थिति में संयोग करने पर निष्पन्न ओजस्यशब्द का तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टा-भ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसि-भ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन

टिप्पणी

की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर ओजस्य सु इस स्थिति में ओजस्- शब्द की नपुंसकलिङ्ग वर्तमान और अदन्त होने से अतोऽम् इस सूत्र से ओजस्य अम् इस स्थिति में अम्-इसकी विभक्तिश्च इससे विभक्तिसंज्ञक होने से न विभक्तौ तुस्माः इस निषेधसूत्र के कारण से हलन्त्यम् इस सूत्र से उस मकार की इत्संज्ञाभाव में ओजस्य अम् इस स्थिति में अमि पूर्वः इससे पूर्वरूप एकादेश होने पर अकार सभी वर्णों को मिलान करने पर **ओजस्यम्** यह रूप सिद्ध होता है।

**ओजस्**- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा और ओजः प्रकाशः अस्ति अस्मिन् इस प्रकार विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से उस ख- प्रत्यय को करने पर ओजस् ख इस स्थि ति में आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से खकार के स्थान में ईन् आदेश होने पर ओजस् ईन् अ इस स्थिति में वर्णों को मिलाने पर निष्पन्न ओजसीन इस शब्दस्वरूप की तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधि कार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय ओजसीन सु इस स्थिति में ओजस् शब्द की क्लीबलिङ्ग में वर्तमान और अदन्त होने से अतोऽम् इस सूत्र से ओजसीन अम् इस स्थिति में अम्-इसकी विभक्तिश्च इससे और स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ इस परिभाषा से विभक्ति संज्ञक होने से न विभक्तौ तुस्माः इस निषेधसूत्र के कारण हलन्त्यम् इस सूत्र कसे उस मकार की इत्संज्ञा अभाव में ओजसीन अम् यह हुआ इस स्थिति में अमि पूर्वः इससे पूर्वरूप एकादेश अकार होने पर और सभी वर्णों को मिलाने से ओजसीनम् यह रूप सिद्ध होता है।

## 19.4 वेशोयशआदेर्भगाद्यल्॥ ( 4.4.131 )

**सूत्रार्थ**- वेश-यश-आदि भग प्रातिपदिक से मत्वर्थ में यल् हो।

**सूत्र का अवतरण**- वेशोभगप्रातिपदिक से और यशोभगप्रातिपदिक से यल्-प्रत्ययविधान के लिए इस सूत्र की रचना की।

**सूत्रव्याख्या**- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। वेशोयशआदेः यह पञ्चम्यन्त पद है। भगात् यह पञ्चम्यन्त पद है। भग इस पद का अर्थ श्री, काम, माहात्म्य, शक्ति, कीर्तिरूप अर्थ है। यल् यह प्रथमान्त पद है। वेशश्च यशश्च वेशयशसी, ते आदौ यस्य स वोशोयशआदिः, तस्मात् वेशोयशआदेः। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आती है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। प्रत्ययः, परश्च इनका यहाँ अधिकार है। उससे पदों का अन्वय होता है- छन्दसि मत्वर्थे वेशोयशआदेः भगात् प्रातिपदिकात् यल् प्रत्ययः परः इति। और उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में मत्वर्थ वेश यश आदि भग प्रातिपदिक से यल्-प्रत्यय परे होता है।

**उदाहरण में सूत्र अर्थ का समन्वय**- वेशोभग- शब्द का समासान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और वेशोभगो विद्यते यस्य स इस विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से यल्-प्रत्यय करने पर वेशोभग यल् इस स्थिति में हलन्त्यम् इस सूत्र से यल्- प्रत्ययान्त्य के लकार की इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस की इत्संज्ञक लकार का लोप होने पर वेशोभग य इस स्थिति में यचि भम् इससे वेशोभग इसकी भ संज्ञा होने पर तदन्त अकार का यस्येति च इससे लोप होने पर वेशोभग् य इस स्थिति में संयोग निष्पन्न करने पर वेशोभग्य इस शब्दस्वरूप का तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इस अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टा-भ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसि-भ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्ष में सु प्रत्यय करने पर वेशोभग्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सु प्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकारस्य का लोप होने पर वेशोभग्य स् इस स्थिति में समुदाय सुबन्त की सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर तदन्त सकार के स्थान पर ससजुषो रुः इससे रु- इसका आदेश होने पर और अनुबन्धलोप होने पर वेशोभग्य र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर सभी वर्णों का मिलान करने पर वेशोभग्यः यह रूप सिद्ध होता है।

**यशोभग**- इस शब्द के समासान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और यशोभगो विद्यते यस्य स यह विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से यल्-प्रत्यय करने पर यशोभग यल् इस स्थिति में हलन्त्यम् इस सूत्र से यल्- प्रत्ययान्त्य के लकार की इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक लकार का लोप होने पर यशोभग य इस स्थिति में यचि भम् इससे यशोभग इसकी भसंज्ञा होने पर उस अकार की यस्येति च इससे लोप होने पर यशोभग् य इस स्थिति में संयोग से निष्पन्न होने पर यशोभग्य इस शब्दस्वरूप का तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर यशोभग्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सुप्रत्ययान्त की उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप करने पर यशोभग्य स् इस स्थिति में समुदाय की सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर उस सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु- यह आदेश होने पर और अनुबन्धलोप करने पर यशोभग्य र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर **यशोभग्यः** यह रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणी

## 19.5 ख च॥ (4.4.132)

**सूत्रार्थः**- वेशोयशआदि प्रातिपदिक से मत्वर्थ में ख-प्रत्यय होता है।

**सूत्र का अवतरण**- वेशोभगो विद्यते यस्य स इस विग्रह में विद्यमान होने से वेशोभगप्रातिपदिक से ख प्रत्ययविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

**सूत्र की व्याख्या**- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। ख यह अव्ययपद है। च यह अव्ययपद है। वेशोयशआदेर्भगाद्यल् इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति आ रही है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका अधिकार है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आ रही है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस पद की अनुवृति आती है। तद्धिताः इसकी अनुवृति आ रही है। सूत्र का अर्थ ही वेशोयशआदि प्रातिपदिक से भगात् तद्धित से ख-प्रत्यय परे हो छन्द विषय में।

**उदाहरण**- वेशोभगीनः, यशोभगीनः चेति।

**सूत्र अर्थ का समन्वय**- वेशोभग- शब्द का समासान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और वेशोभगो विद्यते यस्य स इसे विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से खप्रत्यय करने पर वेशोभग ख इस स्थिति में आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादि नाम् इस सूत्र से खकार स्थान पर ईन्- यह आदेश होने पर वेशोभग ईन् अ इस स्थिति में यचि भम् इस सूत्र से वेशोभगशब्द के अन्त्य अकार की भसंज्ञा होने पर यस्येति च इस सूत्र से उसके लोप होने पर वर्णसम्मेलन करने पर निष्पन्न वेशोभगीन इस शब्दस्वरूप की तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त में प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर वेशीभगीन सु इस स्थिति में अनुनासिक होने से पाणिनीयैः प्रतिज्ञातस्य सुप्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार के लोप होने पर वेशोभगीन स् इस स्थिति में समुदाय सुबन्त की सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर उस सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु- यह आदेश होने पर अनुबन्धलोप करने पर वेशोभगीन र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रु के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर और सभी वर्णों के मिलान करने पर **वेशोभगीनः** यह रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार **यशोभगीनः** इत्यादि में भी जानना चाहिए।

## 19.6 सोममर्हति यः॥ (4.4.137)

**सूत्र का अर्थ**- द्वितीयान्त समर्थ सोमप्रातिपदिक से अर्हति इस अर्थ में य प्रत्यय हो।

टिप्पणी



**सूत्र का अवतरण**- सोमम् अर्हति इस विग्रह में सोम शब्द से य प्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

**सूत्र की व्याख्या**- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। सोमम् यह द्वितीयान्त पद है। अर्हति यह क्रियापद है। यः यह प्रथमान्त पद है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आ रही है। प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की यहाँ अनुवृति आती है। प्रत्ययः परश्च इन दो पद का यहाँ अधिकार है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस पद की अनुवृति आती है। तद्धिताः इसकी अनुवृति है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि सोममर्हति प्रातिपदिकात् यः तद्धितः प्रत्ययः परः इति। और सूत्र का अर्थ होता है सोम अर्हति इस अर्थ में द्वितीयान्त समर्थ सोम प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक यप्रत्यय परे होता है।

**उदाहरण में सूत्र अर्थ का समन्वय**- सोमशब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और सोममर्हति यह विग्रह करने पर द्वितीयान्त सोमप्रातिपदिक से अर्हति अर्थ में प्रकृतसूत्र से य प्रत्यय करने पर सोम य इस स्थिति में यचि भम् इससे सोम शब्द की भ संज्ञा होने पर यस्येति च इससे सोम शब्द के अन्त्य अकार का लोप होने पर संयोग करने पर निष्पन्न सोम्यप्रातिपदिक के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर सोम्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञात के अनुसार सुप्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर सोम्य स् इस स्थिति में समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर तदन्त सकार के स्थान पर ससजुषो रुः इससे रु यह आदेश होने पर और अनुबन्धलोप होने पर सोम्य र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर **सोम्यः** यह रूप सिद्ध होता है।

## 19.7 वसोः समूहे च॥ ( 4.4.140 )

**सूत्र का अर्थ**- वसु प्रातिपदिक से समूह तथा मयट के अर्थ में यत् प्रत्यय हो।

**सूत्र का अवतरण**- वसु प्रतिपदिक समूह अर्थ में और मयट अर्थ में यत्-प्रत्ययविधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य भगवान पाणिनि ने की।

**सूत्र की व्याख्या**- यह त्रिपदात्मक विधिसूत्र है। वसोः यह पञ्चम्यन्त पद है। समूहे यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। चकार बल से मयट अर्थ में भी यत्-प्रत्यय

होता है, यह अर्थ भी प्राप्त होता है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनके अधिकार में है। मये च इस सूत्र से मये इसकी अनुवृति आ रही है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आती है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस पद की अनुवृति आ रही है। तद्धिताः इसकी अनुवृति आती है। उससे सूत्र का अर्थ होता है वसुप्रातिपदिक से समूह अर्थ में और मयट अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय हो।

**उदाहरण**- वसव्यः।

**सूत्र अर्थ का समन्वय**- वसु शब्द देवतावाची और धनवाची भी होता है। देववाचक वसु शब्द से समूह अर्थ की विवक्षा में अण्प्रत्यय प्राप्त होने पर धनवाचक वसु शब्द से समूह अर्थ की विवक्षा में अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् इस सूत्र से ठक्प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से दोनों को बाधकर यत्-प्रत्यय करने पर वसु यत् इस स्थिति में अनुबन्ध लोप होने पर वसु य इस स्थिति में ओर्गुणः इससे उकार को गुण ओकार करने पर वसो य इस स्थिति में वान्तो यि प्रत्यये इससे ओकार के स्थान पर अवादेश करने पर वसव् य इस स्थिति में संयोग निष्पन्न होने से वसव्य प्रातिपदिक से सुप्रत्यय करने पर विभक्तिकार्य में वसव्यः यह रूप बनता है।

## पाठगत प्रश्न-19.1

1. मत्वर्थे मासतन्त्वोः इससे किस अर्थ में यत्-प्रत्यय का विधान है।
2. मधोर्ञ इस सूत्र से क्या प्रत्यय होता है।
3. मधुशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा विधायक सूत्र क्या है।
4. नभस्यः इसका क्या अर्थ है।
5. नभस्य इस स्थिति में प्रातिपदिक संज्ञाविधायक सूत्र लिखो।
6. नभस्यः यहाँ पर सुप्प्रत्ययविधायक सूत्र लिखो।
7. मधुशब्द से मत्वर्थ में ञ प्रत्ययविधायक सूत्र क्या है।
8. ओजस्य इसका क्या अर्थ है।
9. मत्वर्थ में यल्प्रत्यविधायक सूत्र क्या है।
10. वेशोभगीनः यहाँ पर किस सूत्र से क्या प्रत्यय होता है।
11. सोममर्हति यः यहाँ पर किससे य प्रत्यय किया गया है।
12. वसोः समूहे च इस सूत्र में चकार बल से क्या सिद्ध होता है।

टिप्पणी



## 19.8 नक्षत्राद्घः॥ ( 4.4.141 )

**सूत्र का अर्थ**- नक्षत्र प्रातिपदिक से घ हो छन्द में और स्वार्थ में।

**सूत्र का अवतरण**- नक्षत्र प्रातिपदिक से छन्द में घ-प्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

**सूत्र की व्याख्या**- यह विधिसूत्र दो पद वाला है। नक्षत्रात् घः यह सूत्र में आये पदच्छेद। नक्षत्रात् यह पञ्चम्यन्त पद है। घः यह प्रथमान्त पद है। प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परः इनका अधिकार है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति है। नक्षत्रात् यहाँ पञ्चमी श्रवण से तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा से पर का अर्थ प्राप्त होता है। यहाँ किस अर्थ में घ-प्रत्यय हो इसका यहाँ पर निर्देश नही किया गया है। इसलिए यह प्रत्यय अनिर्दिष्ट है। उस अनिर्दिष्ट प्रत्यय से स्वार्थ में होता है इस नियम से घ प्रत्यय यहाँ स्वार्थ में होता है। अर्थात् घ प्रत्यय जिस प्रातिपदिक से किया जाता है उसी प्रातिपदिक के अर्थ में ही वह होता है। तद्धिता इसकी अनुवृति आती है। इसलिए इस सूत्र का अर्थ होता है छन्द में नक्षत्र प्रातिपदिक से परे तद्धितसंज्ञक घ प्रत्यय स्वार्थ में होता है।

**उदाहरण**- नक्षत्रियः।

**सूत्र अर्थ का समन्वय**– नक्षत्रप्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से घ-प्रत्यय करने पर नक्षत्र घ यह स्थिति होती है। वहा यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से परिष्कार करने पर आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से घकार के स्थान में इय् यह आदेश होने पर नक्षत्र इय् अ इस स्थिति में यचि भम् इस सूत्र से नक्षत्र शब्द की भ संज्ञा होने पर यस्येति च इस सूत्र से रकार उत्तर अकार का लोप करने पर और संयोग करने पर निष्पन्न नक्षत्रिय- शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उस प्रातिपदिक संज्ञा करने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर नक्षत्रिय सु इअ स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सुप्रत्ययान्त्य के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर नक्षत्रिय स् इस स्थिति में समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उस पदसंज्ञा के तदन्त सकार के स्थान पर ससजुषो रुः इससे रु- आदेश होने पर और अनुबन्धलोप करने पर नक्षत्रिय र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश करने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर **नक्षत्रियः** यह रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणी

## 19.9 सर्वदेवात्तातिल्॥ (4.4.142)

**सूत्रार्थ**- सर्व और देव प्रातिपदिक से छन्द में तातिल्-प्रत्यय हो।

**सूत्र का अवतरण**- सर्वप्रातिपदिक से और देवप्रातिपदिक से तातिल्-प्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

**सूत्र की व्याख्या**- इस सूत्र में दो पद है। सर्वदेवात् तातिल् यह सूत्र में आये पदच्छेद है। सर्वदेवात् यह पञ्चम्यन्त पद है। सर्वश्च देवश्च इति सर्वदेवम् तस्मात् सर्वदेवात् इति समाहारद्वन्द्वसमास। तातिल् प्रथमान्त पद है। ङ्याप्प्रातिपदिकात् इस सूत्र से प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। प्रत्ययः, परः इन दोनों का अधिकार है। तद्धिताः इसकी अनुवृति है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति। यहाँ किस अर्थ में तातिल्प्रत्यय हो इसका निर्देश नही किया है। इसलिए इस प्रत्यय का अनिर्देश है। उससे अनिर्दिष्ट प्रत्यय स्वार्थ में होते है इस नियम से तातिल्प्रत्यय यहाँ स्वार्थ में होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में सर्वप्रातिपदिक से और देवप्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक तातिल्-प्रत्यय स्वार्थ में हो।

**उदाहरण**- सर्वतातिम्, देवतातिम्।

**सूत्र अर्थ का समन्वय**– सर्वादिगण में पढ़े हुए सर्वादीनि सर्वनामानि इस सूत्र से सर्वनामसंज्ञक सर्व- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा में उस प्रकृतसूत्र से स्वार्थ में तातिल्-प्रत्यय करने पर सर्व तातिल् इस स्थिति में तातिल्-प्रत्ययान्त्य के लकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस लकार के लोप होने पर सर्व ताति इस स्थिति में संयोग होने पर निष्पन्न सर्वताति शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इति सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय में प्राप्त में द्वितीया एकवचन की विवक्षा में अम करने पर सर्वताति अम् इस स्थिति में इकार के और अकार के स्थान में अमि पूर्वः इससे पूर्वरूप एकादेश करने पर इकार और सभी वर्णों के मिलान करने पर **सर्वतातिम्** यह रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार **देवतातिम्** यहाँ पर भी पूर्ववत् प्रक्रिया जाननी चाहिए।

## 19.10 सप्तनोऽञ्छन्दसि॥ (4.1.61)

**सूत्रार्थ**- सप्तन प्रातिपदिक से छन्द में तदस्य परिमाण इस अर्थ में अञ् हो।

**सूत्रावतरणम्**- छन्द में सप्त परिमाण वर्ग अथवा एषामिति विग्रह करने पर सप्तनः प्रातिपदिक से अञ्-प्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

**सूत्र की व्याख्या**- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। सप्तनः अञ् छन्दसि ये सूत्र में आये पदच्छेद है। सप्तनः यह पञ्चम्यन्त पद है। अञ् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। पञ्चद्दशतौ वर्गे च इस सूत्र से वर्गे इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तदस्य परिमाणम् इस सम्पूर्ण सूत्र की यहां अनुवृति आती है। ङ्याप्प्रातिपदिक इस सूत्र से प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। प्रत्ययः, परः इन दोनों का अधिकार है। तद्धिताः इसकी अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में सप्तन्-प्रातिपदिक से तदस्य परिमाण इस अर्थ में और वर्ग अर्थ में तद्धितसंज्ञक अञ्-प्रत्यय हो।

**उदाहरण**- साप्तानि।

**सूत्र अर्थ का समन्वय**- छन्द में सप्त परिमाणं वर्गो वा एषामिति विग्रह करने सप्तन् इस प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से अञ्-प्रत्यय करने पर सप्तन् अञ् इस स्थिति में ञकार के हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इससे तल्लोप करने पर सप्तन् अ इस स्थिति में अचोऽन्त्यादि टि इससे सप्तन के अन्भाग की टि संज्ञा में नस्तद्धिते इससे टी के अन्-इसका लोप होने पर सप्त् अ इस स्थिति में तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से आदि अच अकार को वृद्धि आकार करने पर साप्त् अ इस स्थिति में संयोग करने पर निष्पन्न साप्त् अ शब्दस्वरूप की तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से इक्कीस स्वादिप्रत्ययो प्राप्त में प्रथमाबहुवचन की विवक्षा में जस करने पर साप्त जस् इस स्थिति में जस्-शसोः शिः इससे सम्पूर्ण जस्- प्रत्यय के स्थान में शि- आदेश करने पर शि-प्रत्ययादि में शकार की लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस शकार के लोप करने पर साप्त इ इस स्थिति में शि- इसकी शि सर्वनामस्थानम् इससे सर्वनामस्थानसंज्ञा होने और नपुंसकस्य झलचः इस सूत्र से साप्त-शब्द की अन्त्य आकार की नुम आगम करने पर नुम्-इसके उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इस सूत्र से इत्संज्ञया करने पर, मकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस मकार अकार के लोप होने पर साप्तन् इ इस स्थिति मंय सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इससे नान्त साप्तन्-शब्द के उपध के अकार की दीर्घ करने पर और सभी वर्णो के मिलान करने पर **साप्तानि** यह रूप सिद्ध होती है।

## 19.11 संपरिपूर्वात् ख च॥ (5.1.62)

**सूत्रार्थ**- सं परि पूर्वक वत्सरान्त प्रातिपदिक से छन्द विषय में अधीष्टादि अर्थ में ख और छ प्रत्यय हो।

**सूत्र का अवतरण**- संवत्सरेण निर्वृत्तः संवत्सरं व्याप्य अधीष्टो भृतो भूतो भावी वा

टिप्पणी

इस विग्रह करने पर संवत्सरप्रातिपदिक से ख-प्रत्ययविधान करने के लिए और छ-प्रत्ययविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की।

**सूत्रव्याख्या**- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। संपरिपूर्वात् यह पञ्चम्यन्त पद है। ख यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि इस सूत्र से वत्सरात् इस पञ्चम्यन्त छन्द इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। तमधीष्टो भृतो भूतो भावी इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति है। ङ्याप्प्रातिपदिकात् इस सूत्र से प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। प्रत्ययः, परः इन दोनों का अधिकार है। सूत्रस्थ चकार बल से छ-प्रत्यय का भी विधान है। और सूत्र का अर्थ होता है अधीष्ट प्रभृति अर्थ में छन्द में वत्सरान्त प्रातिपदिक से - प्रत्यय और छप्रत्यय होता है।

**उदाहरण**- संवत्सरीणः यह उदाहरण है। संवत्सरेण निर्वृत्तः संवत्सरं व्याप्य अधीष्टो भृतो भूतो भावी वा इस विग्रह में प्रकृतसूत्र से ख-प्रत्यय करने पर ख के स्थान में ईन्-आदेश होने पर संवत्सर ईन् अ इस स्थिति में यचि भम् इससे भसंज्ञा होने पर यस्येति च इससे अकार का लोप होने पर संवत्सर् ईन् अ इस स्थिति में नकार की अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इससे णकार के संयोग करने पर निष्पन्न संवत्सरीण प्रातिपदिक से सुविभक्ति आदि विभक्ति के कार्य होने पर **संवत्सरीणः** यह रूप बनता है।

## 19.12 उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे॥ (5.1.118)

**सूत्रार्थ**- धात्वर्थ विशिष्ट साधन में वर्तमान वति हो।

**सूत्रावतरण**- धात्वर्थ क्रियाविशिष्ट साधन में वर्तमान उपसर्ग से वति-प्रत्ययविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

**सूत्रव्याख्या**- यह विधिसूत्र है। इसमें तीन पद है। उपसर्गात् छन्दसि धात्वर्थे ये सूत्र में आये पदच्छेद है। उपसर्गात् यह पञ्चम्यन्त पद है इसलिए तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा से उत्तर यह पद प्राप्त होता है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद यहाँ वैषयिकसप्तमी है। धात्वर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। धात्वर्थ क्रिया। तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः इस सूत्र से वति इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका यहाँ अधिकार है। तद्धिताः इसकी अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में धात्वर्थ क्रिया में अर्थविशिष्टसाधन में उपसर्ग से परे तद्धितसंज्ञक वतिप्रत्यय हो। यह प्रत्यय स्वार्थिक है क्योकि इसका किस अर्थ में विधान करते है इसका निर्देश नहीं किया गया है। इसलिए स्वार्थ में ही वतिप्रत्यय होता है। और सूत्र का अर्थ होता है वेद विषय में धात्वर्थक्रिया विशिष्टसाधन में उपसर्ग से परे तद्धितसंज्ञक वतिप्रत्यय स्वार्थ में हो।

**उदाहरण**- यद् उद्वतो निवतः इत्युदाहरण।

**सूत्र अर्थ का समन्वय**– धात्वर्थक्रिया विशिष्टसाधन में प्रकृतसूत्र से वर्तमान उत्-उपसर्ग से वतिप्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप करने पर उद्वत् इस स्थिति में प्रातिपदिक ङस्-प्रत्यय

करने पर अनुबन्धलोप करने पर उद्वत् अस् इस स्थिति में सकार को ससजुषो रुः इससे रुत्वेऽनुबन्धलोप करने पर उद्वतर् इस स्थिति में इस सुबन्तसमुदाय की सुप्तिऽन्तं पदम् इससे पदसंज्ञा होने पर पदान्त्य रेफ का खरवसानयोर्विसर्जनीय इससे विसर्ग करने पर उद्वतः यह रूप सिद्ध होता है।

## पाठगत प्रश्न-19.2

13. नक्षत्राद्घः इस सूत्र में नक्षत्र शब्द से घ प्रत्यय किस अर्थ में होता है?
14. सर्वदेवात्तातिल् इससे तातिल्प्रत्यय किससे होता है?
15. सप्तनोऽञ्छन्दसि इससे अञ्प्रत्यय किस अर्थ में होता है?
16. सप्तनोऽञ्छन्दसि इस सूत्र का पदच्छेद प्रदर्शित कीजिए?
17. साप्तनि इसका विग्रह क्या है?
18. सम्पूर्वात् ख च इस सूत्र में चकार से किस प्रत्यय का ग्रहण होता है?
19. उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे इससे क्या प्रत्यय होता है?
20. उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे इस सूत्र का पदच्छेद लिखें।

## पाठसार

इस पाठ में आपने मत्वर्थ में जो प्रत्यय होते है उस विषय में जाना है। यहाँ यत्-ञ-ख-यल्-घ-तातिल्-अञ्-वति इत्यादि प्रत्ययो के विषय में आलोचना की गई है। यहाँ इन प्रत्ययो का जो विधान करते है उन सूत्रो की भी विशेष रूप से आलोचना की है। उस उस प्रत्यय के द्वारा जो रूप होते है उनके मध्य में प्रसिद्ध प्रक्रिया को भी यहाँ दिखाया गया है।

## पाठान्त प्रश्न

1. नभस्यः इस रूप को सूत्र सहित लिखिए।
2. माधवः इस रूप को सूत्र सहित लिखिए।
3. ओजसीनम् इस रूप को सूत्र सहित लिखिए।
4. वेशोभग्यः इस रूप की सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।
5. यशोभगीनः इस रूप को सूत्र सहित लिखिए।
6. सोममर्हति यः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

टिप्पणी

7. वसव्यः इस रूप की सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।
8. नक्षत्राद्धः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
9. साप्तानि इस रूप की सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### 19.1

1. मत्वर्थ में।
2. मत्वर्थ में मास और तनू से ञ और यत् प्रत्यय भी होता है।
3. कृत्तद्धितसमासाश्च यह मधु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा विधायक सूत्र है।
4. नभस्य शब्द का मेघयुक्त मास यह अर्थ है।
5. स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् यह यहाँ सुप्प्रत्ययविधायक सूत्र है।
6. कृत्तद्धितसमासाश्च इससे नभस्य की प्रातिपदिक संज्ञाविधायक सूत्र है।
7. मधोर्ञ च इस सूत्र से।
8. दिनम् यह अर्थ है।
9. वेशोयशआदेर्भगाद्यल् इस सूत्र को।
10. ख च इस सूत्र से खप्रत्यय।
11. द्वितीयान्त सोमशब्द से।
12. चकार बल से मयट अर्थ में भी यत्-प्रत्यय सिद्ध होता है।

### 19.2

13. स्वार्थ में।
14. सर्व प्रातिपदिक से और देवप्रातिपदिक से।
15. परिमाण इस अर्थ में
16. सप्तनोऽञ्छन्दसि इसमें सप्तनः अञ् छन्दसि ये सूत्र में आये पदच्छेद है
17. साप्तनि इत्यस्य छन्दसि सप्त परिमाणं वर्ग वा एषामिति विग्रहः।
18. छ प्रत्यय का ग्रहण।
19. वति प्रत्यय।
20. उपसर्गात् छन्दसि धात्वर्थे ये सूत्र में आये पदच्छेद

**उन्नीसवां पाठ समाप्त**